✺ 12 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] अगर सूक्ष्म में भी हबच (लालच) का विकार है, कोई चीज़ हबच के कारण इकट्ठी करके अपने पास जमा करके रख दी तो वही अन्त में मुसीबत के रूप में याद आती है इसलिए बाबा कहते– बच्चे, अपने पास कुछ भी न रखो।

2] दिन-प्रतिदिन नीचे उतरते जाते हैं। फिर याद की यात्रा से ऊपर चढ़ सकते हैं। फिर तो दरकार नहीं जो हम याद करें और ऊपर चढ़े। सतयुग के बाद फिर उतरना है। सतयुग में भी याद करें तो नीचे उतरे ही नहीं। ड्राम अनुसार उतरना ही है, तो याद ही नहीं करते हैं। उतरना भी जरूर है फिर याद करने का उपाय बाप ही बतलाते हैं क्योंकि ऊपर जाना है। संगम पर ही आकर बाप सिखलाते हैं कि अब चढ़ती कला शुरू होती है।

3] मानव मत कहती है ईश्वर सर्वव्यापी है। ईश्वर की मत कहती है नहीं। बाप कहते हैं मैं आया हूँ स्वर्ग की स्थापना करने तो जरूर यह नर्क है। यहाँ 5 विकार सबमें प्रवेश हैं। विकारी दुनिया है तब तो मैं आता हूँ निर्विकारी बनाने के लिए।

4] बाप आकर यह सब बातें समझाते हैं फिर भी बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। हरेक की बुद्धि नम्बरवार है ना। जितनी बुद्धि उतनी टीचर की पढ़ाई धारण कर सकते हैं। यह है बेहद की पढ़ाई। पढ़ाई के अनुसार ही नम्बरवार पद पाते हैं। भल पढ़ाई एक ही है मनुष्य से देवता बनने की परन्तु डिनायस्टी बनती है ना। यह भी बुद्धि में आना चाहिए कि हम कौन-सा पद पायेंगे ? राजा बनना तो मेहनत का काम है। राजाओं के पास दास-दासियां भी चाहिए। दास-दासियां कौन बनते हैं, यह भी तुम समझ सकते हो। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार हरेक को दासियां मिलती होंगी तो ऐसा नहीं पढ़ना चाहिए जो जन्म-जन्मान्तर दास-दासी बनें। पुरूषार्थ करना है ऊंच बनने का।

✺ योग-

1] यह याद में बिठाने की रस्म भी ड्रामा में है क्योंकि बहुत हैं जो सारा दिन याद नहीं करते हैं, एक मिनट भी याद नहीं करते हैं फिर याद दिलाने के लिए यहाँ बिठाते हैं। याद करने की युक्ति बतलाते हैं तो पक्का हो जाए। बाप की याद से ही हमको सतोप्रधान बनना है। सतोप्रधान बनने की बाप ने फर्स्टक्लास रीयल युक्ति बताई है। पतित-पावन तो एक ही है, वह आकर युक्ति बताते हैं।

2] यहाँ तुम बच्चे शान्ति में तब बैठते हो जबकि बाप के साथ योग है। अगर बुद्धि का योग यहाँ-वहाँ गया तो शान्त में नहीं हैं, गोया अशान्त हैं। जितना समय यहाँ-वहाँ बुद्धियोग गया, वह निष्फल हुआ क्योंकि पाप तो कटते नहीं।

3] दुनिया यह नहीं जानती कि पाप कैसे कटते हैं ! यह बड़ी महीन बातें हैं। बाप ने कहा है मेरी याद में बैठो, तो जब तक याद की तार जुटी हुई है, उतना समय सफलता है। जरा भी बुद्धि इधर-उधर गई तो वह टाइम वेस्ट हुआ, निष्फल हुआ। बाप का डायरेक्शन है ना कि बच्चे मुझे याद करो, अगर याद नहीं किया तो निष्फल हुआ। इससे क्या होगा? तुम जल्दी सतोप्रधान नहीं बनेंगे फिर तो आदत पड़ जायेगी। यह होता रहेगा।

4] बाप कहते हैं अब सुखधाम में जाना है तो मुझे याद करो। याद से तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी।

5] तो सच्ची शान्ति बाप की याद में है, जरा भी बुद्धि इधर-उधर गई तो टाइम वेस्ट होगा। कमाई कम होगी। सतोप्रधान बन नहीं सकेंगे। यह भी समझाया है कि हाथों से काम करते रहो, दिल से बाप को याद करो। शरीर को तन्दरूस्त रखने के लिए घूमना फिरना, यह भी भल करो। परन्तु बुद्धि में बाप की याद रहे।

...2

6] अगर साथ में कोई हो तो झरमुई-झगमुई (परचिंतन) नहीं करनी है। यह तो हर एक की दिल गवाही देती है। बाबा समझा देते हैं ऐसी अवस्था में चक्कर लगाओ।

7] झाड़ू लगाओ, खाना बनाओ तो भी शिवबाबा की याद में बनाओ तो ताकत आयेगी। यह भी युक्ति चाहिए, इसमें तुम्हारा ही कल्याण होगा फिर तुम याद में बैठेंगे तो औरों को भी कशिक होगी। एक-दो को कशिश तो होती है ना। जितना तुम जास्ती में रहेंगे उतना सन्नाटा अच्छा हो जायेगा। एक-दो का प्रभाव ड्रामा अनुसार पड़ता है। याद की यात्रा तो बहुत कल्याणकारी है, इसमें झूठ बोलने की दरकार नहीं है। सच्चे बाप के बच्चे हैं तो सच्चा होकर चलना है।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– तुम यहाँ में रहकर पाप दग्ध करने के लिए आये हो इसलिए बुद्धियोग निष्कल न जाए, इस बात का पूरा ध्यान रखना है।

2] तुम्हें सब संकल्पों को भी समेटकर बाप की याद में रहने की टेव (आदत) डालनी है इसलिए देही-अभिमानी बनने का अभ्यास करो।

3] बच्चों को रोज़-रोज़ याद दिलाते हैं– देही-अभिमानी बनो, क्योंकि बुद्धि इधर-उधर जाती है।

4] पहली-पहली बात समझाते हैं तुमको पावन बनना है तो मामेकम् याद करो परन्तु माया घड़ी-घड़ी भुला देती है इसलिए बाप खबरदार करते हैं।

5] पादरी लोग जाते हैं एकदम शान्त में, तुम लोग ज्ञान की बातें सारा समय तो नहीं करेंगे फिर जबान को शान्त में लाकर **शिवबाबा की याद में रेस करनी चाहिए।** जैसे खाने के समय बाबा कहते हैं– याद में बैठकर खाओ, अपना चार्ट देखो।

6] राजऋषि अर्थात् एक तरफ राज्य दूसरे ऋषि अर्थात् बेहद के वैरागी। अगर कहाँ भी चाहे अपने में, चाहे व्यक्ति में, चाहे वस्तु में कहाँ भी लगाव है तो राजऋषि नहीं। जिसका संकल्प मात्र भी थोड़ा लगाव है उसके दो नांव में पांव हुए, फिर न यहाँ के रहेंगे न वहाँ के। इसलिए राजऋषि बनो, बेहद के वैरागी बनो अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई– यह पाठ पक्का करो।

7] क्रोध अग्नि रूप है जो खुद को भी जलाता और दूसरों को भी जला देता है इसलिए क्रोध मुक्त बनो।

✺ सेवा-

1] कोई को समझाना है तो भी पहली-पहली बात समझाओ कि भगवान् कौन है? भगवान् जो पतित-पावन दु:ख हर्ता, सुख कर्ता है, वह कहाँ है?

2] तुम पैगाम पहुँचाते हो ड्रामा के प्लैन अनुसार, कोई को पैगाम नहीं देते हैं तो गोया सर्विस नहीं करते हैं। सारी दुनिया में पैगाम तो पहुँचाना है कि बाप कहते हैं मामेकम् याद करो।

3] तो मूल बात है बाप का परिचय देना क्योंकि कोई जानते नहीं हैं। ऊंच ते ऊंच बाप है सारे विश्व को पावन बनाने वाला है।